International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 207-208

यशपाल के उपन्यासों में लोकतात्विक विषय-विविधता

[1] डॉ राजकुमार नाइक, [2] वंदना रानी, [3] डॉ रमेष कुमार

[1] पी0एच0डी0 षोधार्थी, दक्षिणी हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, भारत।
[2] प्रो0स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, दक्षिणी हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, भारत।
[3] हिंदी विभाग, जे0सी0डी0 विद्यापीठ, सिरसा, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

सन् १९४१ हिंदी उपन्यास -साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण माना जाता है। इस वर्ष हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में एक नये अध्ययन का आंरभ हुआ। यही एक वर्ष है जिसमें यशपाल ने अपने आरम्भिक उपन्यास 'दादा कामरेड' का प्रकाशन कर हिंदी उपन्यास साहित्य में राजनीति और रोमासं के समन्वय का युग आरम्भ किया। 'दादा कॉमरेड' अपने रूप के कारण बहुत चर्चित हुए ही, परन्तु उसने शरद के 'पथेरदायी' तथा जैनेन्द्र के 'सुनीता' उपन्यासों से टक्कर लेकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व की प्रतीति भी दी।

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द्र परवर्ती काल उपन्यास-साहित्य में विभिन्न प्रवृतियों को लेकर उपस्थित हुआ। मध्यवर्ग चित्रण, ऐतिहासिक, पुनरावलोकन, व्यक्तिगत जीवन की सृष्टि, राजनीतिक पक्षधरता, दर्शन का आग्रह जैसे विभिन्न आयाम हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक साथ ऐसे उपस्थित हुए कि कालगत प्रवृतियों को आकलन करना पहाड़ बन गया। यशपाल संक्रामक काल में ही उपन्यास के रूप में अवतीर्ण हुए । उन्होंने विचार, दर्शन, विषय तथा रचना की दृष्टि से अपने स्वतंत्र अस्तित्व के पदचिन्ह उभारे।

सन १९४१ से लेकर सन १९८४ तक के तैतीस वर्षों के काल में ग्यारह श्रेष्ठ उपन्यासों का सृजन कर यशपाल ने हिन्दी उपन्यास साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित किया। उपन्यासकार के रूप यशपाल की लेखनी के विकास पर आज तक अनेक विद्वानों एवं विदुषियों ने गहरा अध्ध्यन किया है परन्तु यशपाल का समुचा उपन्यास -साहित्य अपने पूर्ण परिष्कृत रूप में उनके सामने काल की सीमा के कारण पुर्णस्थ रूप में उपस्थित ना हो सका। अतःउस अध्ययन में विकास गत निष्कर्षों की अपेक्षा करना उचित नहीं होगा। अधिकांश मान्यवर आलोचकों ने (जिसकी चर्चा अगामी पृष्ठों में है ही) यशपाल के उपन्यास विकास के बारे में नकारात्मक निष्कर्ष ही प्रस्तुत किए, परन्तु वास्तविकता यह है कि परवर्ती उपन्यास ने यशपाल की उपन्यासकार के रूप में बनी प्रतिमा एव प्रतिभा की स्थापित शक्ल -सूरत ही बदल डाली। विशेषतः 'बारह घंटे', 'क्यों फंसे','झूठा सच', 'मेरी तेरी उसकी बात' ने यशपाल के औपन्यासिक विकास से नये कीर्तीमान कायम किये। शिल्प, शैली, विषय व विचार-सभी रूपों में पूर्ववर्ती उपन्यासों से सर्वथा भिन्न रूप इन उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत होने के कारण यशपाल के समुचे उपन्यास साहित्य का नये सिरे में विकासत्मक मूल्यांकन करना अवश्यसम्भावी प्रतीत हुआ।

'दादा कामरेड', 'देश द्रोही', 'दिव्या', 'पार्टी कामरेड', 'मनुष्य के रूप', 'अमिता', 'झूठा सच' (भाग-१,२) 'बारह घंटे', 'अप्सरा का श्राप', 'क्यों फंसे?' तथा 'मेरी तेरी उसकी बात', इन ग्यारह कृतियों का उनके प्रकाशन कम के अनुसार मूल्यांकन करने पर ही विकासगत संभावनाओं का पता लगाना संभव होगा अतः अध्ययन का दिशा क्रम यही है। 'दादा कामरेड' से लेकर 'मेरी तेरी उसकी बात' तक लेखक की समय-समय पर परिवर्तित धारणाओं, कथा कम, चरित्रगत विकास तथा शैलीगत उपयोग के आधार पर सिहांगवलोकन करना हो विकासगत मूल्यों की खोज का सही मार्ग है।

कथावस्तु, चरित्र चरण, कथोपकथन, देश काल एंव वातावरण, भाषा, शैली, उद्देश्य तथा शीर्षक इन तत्वों का समाहार ही उपन्यास की शिल्पविधि है किसी भी कलाकृति को कला के प्रतिमाओं के आधार पर ही परखा जाता है। उपन्यास के कलात्मक मूल्यांकन ही आवश्यक है कि उसे शिल्पविधान के तत्वों की कसौटी पर परखा जाए।यशपाल के उपन्यास के शिल्प विधि पर अब तक जो कार्य हुआ उसमें सुक्ष्मता का अभाव निंरतर अखरता था। यह अध्याय इस कमी की पूर्ति हेतु किया गया एक प्रयास मात्र है।

विभिन्न विषय, कथावस्तु के भेद, भाषागत सौंदर्य आदि के माध्यम से यशपाल के समूचे उपन्यास-साहित्य को सुक्ष्मता से परखने का प्रयास किया गया है उद्देश्य है शिल्पविधि के रूप का परिचय करना और उसके माध्यम से कलात्मक मानकों का निर्धारण करना। यशपाल ने अपनी ग्यारह कृतियों में स्थान-स्थान शिल्प एंव शैली की दृष्टि से अनेक प्रयोग कर इन तत्वों के सशक्त रूप की निर्मति की है। हिंदी उपन्यास साहित्य के इतिहास में अलग अध्याय जोड़ने की क्षमता रखने वाले यशपाल जैस सशक्त कलाकार की कला धारणा एंव कला का स्वरूप उनके उपन्यासे के शिल्पविधान से स्पष्ट होता है कि उसका अध्ययन आगे के पृष्ठों में किया गया है।

ग्यारह उपन्यासों की अपनी श्रखंला में यशपाल ने प्रमुख रूप से राजनीति, सामाजिक, प्रेम और विवाह तथा कही -कहीं ऐतिहासिक विषयों पर अपनी कृतियों का निर्माण किया हैं। राजनैतीक उपन्यासों में भारतीय स्वतंत्रता आदोंलन और समकालीन राजनैतीक गतिविधियों को चित्रित कर भारतीय स्वांतत्रय का समांतर इतिहास लिख डाला है। इन गतिविधयों के चित्रण में दलीय राजनीति एंव सजीव चित्र मिलता है। कहीं कहीं सम्यवादी दल का खुला समर्थन भी पाया जाता है। सामाजिक चित्रण के अंतर्गत लेखक ने मध्यवर्ग को अपने चित्रण का केन्द्र बनाया है । इस वर्ग की पारिवारिक स्थिति, आर्थिक कठिनाईयों, सांप्रदायिकत, रस्मों-रिवाज आदि का यथार्थपरक चित्रण किया है। नारी लेखक की रूचि का विषय बन सभी उपन्यासों में उद्घाटित हुई है। लेखक ने नारी -शोषण का विरोध कर उसे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया है। नारी के संदर्भ में लेखक ने प्रेम -विवाह आदि प्रश्नों को उठाकर उनके पांरपारिक दृष्टिकोण पर प्रहार किया है। पुरूष-प्रधान व्यवस्था द्वारा मात्र भोग्या बनाने का उन्होन डटकर विरोध किया है। यौन संबधों के बारे में सामाजिक बंधनों में वे कृत्रिमता देखते है तथा स्वच्छंद सम्बन्धों का समर्थन करते है। ऐतिहासिक विषयों में उन्होने सामन्तशाही के अभिजात वर्ग द्वारा दासों का शोषण दिखा कर वर्ग -संघर्ष का प्राचीन रूप स्पष्ट किया है, तो दूसरी ओर शस्त्रों की होड़ के पीछे दौड़ने की प्रवृति पर नाराजगी जाहीर करते हुए 'विश्वशांति' की आवश्यकता पर बल दिया है। 'दादा कामरेड''दादा कामरेड', 'देश द्रोही',, 'पार्टी कामरेड', 'मनुष्य के रूप, झुठा सच' ' तथा 'मेरी तेरी उसकी बात', उपन्यासों में लेखक ने राजनैतिक गतिविधियों का चित्रण किया है। 'दादा कामरेड' में लेखक ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में होने वाले क्रांतिकारी संघटनो की गतिवधियों पर प्रकाश डाला है। सन् १९३० से लेकर सन् १९३६ तक की गतिवविधियों का यह लेखा-जोखा है। उपन्यास की अनेक घटनाओं तथा 'हरीश' जैसे पात्र में लेखक की जीवनानूभूति की प्रति छवि देखी जा सकती है। 'देशद्रोही'सन् १९४२ के भारत की गतिविधियों से प्रभावित है। द्वितीय महायुद्ध में कम्युनिष्ट की अंग्रेज -समर्थक नीति के कारण उन्हे 'देश- द्रोही' ठहराया था। लेखक ने उपन्यासों को इस तरह पिरोया है की कम्युनिस्टों को उपयुक्त आरोप से मुक्ति मिल सके। 'पार्टी

कॉमरेड' सन् १९४२ से १९४६ तक के काल का चित्रण करता हुआ कम्युनिस्ट कार्य प्रणाली का विस्तार से विवेचन करता है तथा साथ -साथ नौसैनिक विद्रोह के समय के साम्राज्य विरोधी आंदोलन को मूर्त रूप दे जाता है। 'मनुष्य के रूप' वैसे सामाजिक विषयों को उपन्यास रहा है। पर लेखक ने उस विषयों को राजनैतिक पृष्ठ भूमि देकर यथार्थ बनाने की कोशिश की है। द्वितीय महायुद्ध के समय की अनेक राजनैतिक बातों का इस में विवरण है।'झूठा सच', 'तेरी मेरी उसकी बात' भारत के स्वंतत्रता आंदोलन का आँखो-देखा हाल ही है। सन् १९१९ से १९४८ तक की लंबी काल धारा में लेखक ने भारत का स्वतंत्रता सग्रंम, भारतीय राजनीति, अग्रेंजों का दमन, जातीय संगठन, नेताओं की स्वार्थसिद्धि, लुटपाट, आगजनी की घटनाएं आदि का चित्रण किया है। 'देश द्रोही' तथा 'पार्टी कामरेड' जैसे आंरम्भिक उपन्यासों में लेखक विषय -विवेचन में जो पक्षधरता की वृति थी। 'मेरी तेरी उसकी बात' में लेखक की तटस्था उस पर हावी होती हुई दिखाई देती है। विषयगत तटस्थता लेखक को महान बताती है। 'मेरी तेरी उसकी बात' इस दृष्टि से लेखकिय स्तर को ऊंचा उठाता दिखाई देता है।

यशपाल मध्य वर्ग का चित्रण करनें में सिद्धहस्त है। उन्होंनें अपने सामाजिक उपन्यासों से मध्यवर्ग का पारिवारिक जीवन, उनकी आर्थिक समस्याएं, समाज के रस्मों -रिवाज, अंध-श्रधाएं, धार्मिकता, सांप्रदायिकता, संर्कीणता, जातीय दुरविमान, तथा नारी की दुःस्थिति का चित्रण 'मनुष्यक के रूप' में 'सोमा' की गाथा समाज के समूचे नारी वर्ग व्यवस्था बन के सामने आती है। पहाड़ी जीवन के जरीये समाज की संकीर्ण मनोधारणा को चित्रित कर विधवा नारी पर समाज द्वारा ढायें जाने वाले अत्याचारों का पर्दाफाश किया हैं। 'झूठा सच' की भोला पांधे की गली तो भारतीय जन मानस की प्रतिरूप ही है। समाज में निहित संप्रदायिकता, आर्थिक मजबूरी, विभाजन के प्रणाम स्वरूप तितर-बितर हुए पारिवारिक जीवन को लेखक ने बड़ी खुबी से चित्रित किया है। स्वार्थ के लिए संघर्ष, लूटपाट, आगजनी, जातिय द्वेष भावना के आदि के जरीयें परिस्थितियों मनुष्य को कैसे पुशुद्त बना देती है, इसका सुक्ष्मांकन देखते ही बनता है। 'मेरी तेरी उसकी बात' तो भारत के तीन पीढियों के सामाजिक सक्रंमण की कहानी है। राजनिती सामाजिक जीवन पर बरी तरह अपना असर छोड़ जाती हैं पुरानी पीढ़ी में निहत संकीर्णता तथा नयी पीढ़ी की उदारमतवादिता खिाकर लेखक ने आधुनिक विचारों के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। इस उपन्यास में भी 'मनुष्य के रूप' की सीमा तथा 'झूठा सच' की तारा की तरह उषा नामक पात्र का निर्माण नारी के आत्मनिर्भर होने पर बल दिया हैं। सामाजिक विषयों से इस विवेचन से पता चलता हैं कि लेखक अपने समूचे उपन्यासों में विभिन्न विषयों को एक साथ प्रस्तुत कर समाज के विशाल यथार्थ की अनूभुति दे जाता है।

प्रेम,विवाह तथा यौन संबधों के पांरपरिक दृष्टिकोणों पर प्रहार करने के लिए लेखक ने इस विषयों के प्रति क्रातिकारी रूप अपनाया है। प्रेम, विवाह तथा यौन संबंधो के प्रति समाज की नैतिक धारणाओं को लेखक बर्दाशत नहीं करता उसका कहना है कि प्रेम प्राकृतिक आकर्षण है, कामाचर उसकी सहज भावना है, विवाह उसकी पूर्ति का साधन है। व्यक्तिगत इच्छा तथा आकर्षक को कोई भी समाजिक बंधन रोक नहीं पाता हैं। 'दादा कामरेड' को शैलं का नग्न होना, हरीश द्वारा वैसी इच्छा प्रकट करने को वे असामाजिक नहीं मानतें लेखक का कहना है कि शैल स्वय कुछ ना होकर घृणा से नाक-भौं सिकोड़ने वाली की अतृप्त परंतु जागरूक सक्रिय प्रवृति है।[१]'मनुष्य के रूप ' की सोमा जैसी विधवा औरत का धनसिंह, बैरिस्टर सरोला तथा अंत में सुतलीवाला से होने वाले सबंध को परिस्थिति से नारी-मुक्ति का उपाय समझते है। प्रेम-विवाह की समस्याओं को विस्तार से लेखक ने 'बारह घंटे' में चित्रित किया हैं। यह उपन्यास समाज की विधवा-विदुर की समस्या को नयी दृष्टि से देखने की सीख दे जाता है। 'बिनी' और 'फेटेमं' का 'बारह घंटे' के सीमित दायरे में आमूल परिवर्तन दिखा कर लेखन ने प्रेम को मनुष्य की मानसिक, शारीरिक पार्थिव आवश्यकता बताता है। प्रेम की द्वंद्वात्मक स्थिति का चित्रण लेखक ने सोद्देश्य किया जान पड़ता है। प्रेम की अंतरतम आवश्यकता की पूर्ति विवाह है जो जिसे-फेंटेम के विवाह के जरीए स्पष्ट किया गया है। 'क्यों फंसे?' में लेखक ने 'पुराणमित्येव न साधु सर्वम्' का आधार लेकर यौन स्वेच्छाचार को अनैतिक मानने की सामाजिक धारणा का वज्राघात किया है। 'नाभि की लक्ष्मणरेखा' को वे सतीत्व मानने के लिए तैयार नहीं है। उनका कहना है कि नारी की कमर पर पुरूष का एकाधिकार नारी का शोषण ही है । इस प्रकार हम देखते है कि इन प्रश्नों पर लेखक का मत अत्याधुनिक है जिसमें सामाजिक दायित्व का आभाव हैं । लेखक की भूमिका तर्क कर भले ही सही हो, वह धरती की बात नहीं हो पाती। देशगत दुष्टि बदलने का लेखक का यह प्रयास, पाश्चात्य दृष्टिकोण से प्रभावित नजर आता है।

यशपाल ने 'दिव्या' तथ 'अमित' इन दो उपन्यासों के जरिए ऐतिहासिक विषयों का प्रतिपादन किया है। दोनों ही उपन्यास पूर्णरूप से ऐतिहासिक नहीं है, लेखक का भी वैसा दावा नहीं है। ऐतिहासिक विषयों को लेखक ने तत्कालीन समाज को चित्रित करने का साधन माना है। 'दिव्या' उपन्यास में लेखक ने करीब दो हजार वर्ष पूर्व के मौर्य सम्राज्य के ह्रास के उपरांत भारत किस तरह पतन की खाई में गिरा हुआ था, सामाजिक मूल्यों का विघटन कैसे हुआ था तथा सामंतशाही समाज-व्यवस्था ने वर्ग-भेद पर बल देकर दासो के शोषण का कैसा घटिया रवैया अपनाया था, इसका संजीव चित्रण किया है। सांमाशाही में अभिजात वर्ग ने दासों की प्रेम जैसी सहज भावना का स्वातंत्रय भी कैसे छीन लिया था, उपन्यास में लेखक ने बड़ी टीस के साथ इसे उभारा है। प्राचीन काल में धर्मान्धता की जो चरम सीमा थी, वह उपन्यास में बौद्ध धर्माचरण से देखी जा सकती हैं।

'अमिता' में लेखक ने मगध सम्राट अशोक की कलिंग-विजय-गाथा को विस्तार से चित्रित कर अंत में अमिता द्वारा अशोक का हदय परिवर्तन दिखाया है। लेखक ने अशोक के हदय परिर्वतन तथा कलिंग -विजय जैसी इतिहामान्य घटनाओं को चुनकर उनके जरीए युद्ध के परिणामों से विश्व को बचाने हेतु'शातिं' का संदेशा दिया है। अस्त्र शास्त्रों की अबाधित लिप्सा को हिंसा से प्रेरित दिखा कर अहिंसा पर बल दिया है।

इन दोनों उपन्यासों को देखकर यह मालूम होता है कि लेखक ने ऐतिहासिक कथनों के जरीए आधुनिक उद्देश्यों को प्रकट किया है। इतिहास के साथ ईमानदारी का जहां तक प्रश्न है लेखक ने भाषा, वातावरण के चित्रण से इसकी पर्याप्त रक्षा की है। इतिहास के सुक्ष्म अध्ययन के लिए लेखके की सरहना भी की जाये तो वह असमीचीन ना होगी। 'अप्सरा का श्राप' ऐसा ही उपन्यास है जो कालिदास के 'अभिज्ञान शकुलंतम्' की कथा पर आधारित है।

निष्कर्ष के रूप में हम देखते है कि यशपाल ने राजनैतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा प्रेम-यौन आदि विषयों के बहुमुखी प्रयोग से अपने उपन्यासों को रोचक एवं रोमांचक बनाया है इतिहास जैसे नीरस विषयों को सरस एवं सप्राण बनाने की क्षमता पाठक की आंखों को चौधिया देती है। प्रेम -यौन के प्रति लेखक के दृष्टिकोण ने उन विषयों को विवाद्य बनाया है। अधिकांश उपन्यासों में राजनैतिक विषय की चर्चा इस विषय के प्रति लेखक के प्रेम को ही सिद्ध करती है।